





# सुपरहिट रहा '2047 का भारत, मेरे सपनों का भारत' कार्यक्रम

शिक्षा मंत्री आतिशी ने कार्यक्रम में शामिल होकर बच्चों से जाने 2047 के भारत को लेकर उनके विजन, विजेताओं को पुरस्कार देकर किया सम्मानित।

टीम एक्शन इंडिया/नई दिल्ली दिल्ली के स्कूलों में पढ़ रहे बच्चों में 2047 में भारत जब अपनी आजादी की 100वीं वर्षगांठ के बारे में अपने विचारों और जनून को व्यक्त करने के लिए, केंजरीवाल सरकार ने दिल्ली के सभी स्कूलों के लिए "2047 में मेरे सपनों का भारत" प्रतियोगिता का आयोजन किया।

शिक्षा मंत्री आतिशी गुरुवार को त्यागराज स्ट्रीडम में इसके समाप्त समारोह में शामिल हुई, प्रतियोगिता में शामिल बच्चों से बातचीत कर 2047 के जारी को लेकर उनके आइडिया, देश को लेकर उनके सपनों पर चर्चा की और प्रतियोगिता के विजेताओं को सम्मानित किया। गौरतलव है कि प्रतियोगिता में पूरी दिल्ली से लगभग 3.17 लाख छात्र और शिक्षा समिल हुए थे और इसे जबरदस्त विजयिता मिला।

कार्यक्रम के दौरान छात्रों को अपने संबोध में बधाई देते हुए शिक्षा मंत्री आतिशी ने कहा, हायहाँ मौजूद छात्र जिस आत्मविश्वास के साथ 2047 के भारत के लिए अपना विजन प्रस्तुत कर रखे हैं मुझे यह देखकर बहुत खुशी हो गयी है और इसे जबरदस्त विजयिता मिला।





## संपादकीय

## चंद्रयान -3: भारत की एक और छलांग

आज याद आ रही है, उस भारत देश की जो वैश्वक नेतृत्व का अधिकारी रहा। एक बार पुनः भारत ने उसी दिवान की ओर अपने कदम बढ़ाए हैं, जो विश्व का मार्गदर्शन करने की क्षमता रखता है। आज समूचे विश्व ने उस भारत का साक्षात्कार किया है, जो जगत की समस्त शक्तियों का भंडार है। भारत में अवधारणाएं प्रचलित हैं, वह मिथक नहीं, वास्तविक हैं, लेकिन भारत अपनी शक्ति को विस्तृत कर चुका था, उस हुमान की तरह जो महा लवशाली होने के बाद भी अपनी की अहसास नहीं थी। आज देश की प्रधानमंत्री ने रेत्र भौमी भारत की सोई हुई शक्ति को जगाने का कार्य तैयार किया है रहे हैं बेशक वे जापान के नेता हैं, लेकिन हमें ऐसी ही विश्वित करनी होगी, जो भारत के हिस्से में है। यानी वह भारत का नेतृत्व कर रहे हैं। वे देश के 140 कोरेड जनता के लोकतात्रिक मुख्यालय हैं। जब हम वह दृष्टि विकसित करेंगे तो स्वाभाविक रूप से हमें नेतृत्व भी में एक ऐसा सपूत्र दिखायी देगा, जिसकी भारत को जोर रखत है। भारत ने चांद पर कठम रखते ही अपना नाम उस करते में शामिल कर लिया, जो वैश्वक महासूक्ष्मि बनने की ओर जाता है। चंद्रयान नीन की खास उपलब्धि यह है कि भारत ने वह यान चंद्रयान के दीर्घी धूम पर भेजा है, जहां आज तक विश्व का कोई देश नहीं पहुंच सका है। इसका आशय यही है कि भारत ने वह शक्ति है, जो विश्व को आश्वार्यकित कर सकती है। चंद्रयान पर भारत के तियां लहराने के साथ ही आज वर्षे पूर्व का वह भ्रम था कि विश्वित करने में एक वैश्वक योजना के तहत पीछे करेंगे का षड्यंत्र किया गया। यह छद्यंत्र आज भी चल रहा है। इसलिए कुछ लोग विदेशी शिक्षा को भारत की शिक्षा से बेहतर बताने का कुत्सित प्रयास करते हैं, जबकि यह सल्ल नहीं है। पुरातन और श्रेष्ठ भारत की कल्पना का अध्ययन किया तो हमें शास्त्र इस बात को परिभाषित करने में पूरी तरह सेक्षम हैं कि हमारा भारत ज्ञान और विज्ञान के मामले में अन्य देशों से कहीं अधिक छिप है। इस प्रकार कर सकता है कि जहां विश्व का ज्ञान और विज्ञान समाप्त हो जाता है, वहां से भारत का ज्ञान और विज्ञान का प्रारंभ होता है। कौन नहीं जानत कि भारत के पास विश्व की सबसे बड़ी शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षा संस्थान थे, लेकिन गुलामी के काल खड़े में इन शिक्षा केंद्रों को नष्ट कर दिया। इसके बारे भी भारत के पास ज्ञान और विज्ञान की कोई कमी नहीं होती है, लेकिन इस पर ध्यान नहीं दिया गया। आज हम चांद पर पहुंचे हैं, जो भारत की शक्ति का प्रस्तुत है। अब विश्व के सभी देश यह स्वीकृत करने की ओर विश्व हुए हैं कि भारत एक बड़ी महासूक्ष्मि है। अब भारत को इस महासूक्ष्मि का ज्ञान हो चुका है। भारत अपनी निदान से बाहर आ चुका है। अभी तो यह अंगार्ड है, आगे का भारत और भी ज्यादा अपने सामर्थ्य का प्रदर्शन करेगा। हमारे देश के वैज्ञानिकों विश्व को कहं बार इस बात का अहसास कराया है कि हम किसी भी मामले में कम नहीं हैं।

## ऐ चांद.... ! हमें उन में तुम्हीं भाए बहुत !



सुनील कुमार महला

“ सबको चंद्रयान-3 मिशन की लैंडिंग को लेकर बहुत उत्सुकता व जोश था। विभिन्न वैनलों और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के जरिए करोड़ों लोग इस क्षण के साथी बने। इसरो ने हमारा सीना गर्व से चौड़ा कर दिया। जानकारी देना चाहूंगा कि पहले इसरो को भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिति (इन्कोस्पार) के नाम से जाना जाता था। इन्कोस्पार को दूरदर्शिता पर 1962 में भारत सरकार द्वारा स्थापित किया गया था। इन्कोस्पार का गढ़न 15 अगस्त, 1969 को किया गया था इसरो का मुख्यालय बैंगलूरु में स्थित है। पाठकों को यह भी जानकारी देना चाहूंगा कि भारत का पहला उपग्रह, आर्यभट्ट, 19 अप्रैल 1975 को किया गया था इसरो का सार्वात्मक चांद पर उत्सुकता व संघर्ष के रॉकेट की सहायता अंतरिक्ष अनुसंधान समिति (इन्कोस्पार) के नाम से जाना जाता था। इन्कोस्पार का गढ़न 15 अगस्त, 1969 को किया गया था इसरो का मुख्यालय बैंगलूरु में स्थित है। ”



अकबर इलाहाबादी जी ने बड़े ही खुबसूरत शब्दों में बयां किया है—‘लोग कहते हैं बदलता है जमाना सब को पार्द वो हैं जो जमाने को बदल देते हैं।’ भारत ने अंतरिक्ष में इतिहास रच जमाने को बदल दिया है। सच तो यह है कि चंद्रयान-3 मिशन ने इतिहास रचते हुए भारत को अंतरिक्ष के क्षेत्र में सिरमारे देशों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया और अब भारत की नजरें चांद के बाद सूरज की ओर हैं। इसमें कोई संदेह नहीं रहा कि अब भारत ने चांद पर दिया है कि अब भारत की नजरें चांद के बाद सूरज की ओर हैं। इसका अपराध यह है कि भारत ने वह शक्ति वे जापान के नेता हैं, लेकिन हमें ऐसी ही विश्वित करनी होगी, जो भारत के हिस्से में है। यानी वह भारत का नेतृत्व कर रहे हैं। वे देश के 140 कोरेड जनता के लोकतात्रिक मुख्यालय हैं। जब हम वह दृष्टि विकसित करेंगे तो स्वाभाविक रूप से हमें नेतृत्व भी में एक ऐसा सपूत्र दिखायी देगा, जिसका नाम चंद्रयान-3 मिशन है। इसमें कोई संदेह नहीं रहा कि भारत ने वह देश नहीं पहुंच सका है। आज देश के प्रधानमंत्री ने रेत्र भौमी भारत की कोई देश नहीं रही है। चंद्रयान नीन की खास उपलब्धि यह है कि भारत ने वह यान चंद्रयान के दीर्घी धूम पर भेजा है, जहां आज तक विश्व का कोई देश नहीं पहुंच सका है। इसका आशय यही है कि भारत ने वह शक्ति है, जो विश्व को आश्वार्यकित कर सकती है। चंद्रयान पर भारत के तियां लहराने के साथ ही आज वर्षे पूर्व का वह भ्रम था कि विश्वित करने में एक वैश्वक योजना के तहत पीछे करेंगे का षड्यंत्र किया गया। यह छद्यंत्र आज भी चल रहा है। इसलिए कुछ लोग विदेशी शिक्षा को भारत की जाकर करते हैं, जबकि यह ज्यादा अपने सामर्थ्य का प्रदर्शन करेगा। हमारे देश के वैज्ञानिकों विश्व को कहं बार इस बात का अहसास कराया है कि हम किसी भी मामले में कम नहीं हैं।



## कविता

तेरे आगोश  
में हैं हम ऐ  
चांद!

हमारे चंद्रयान-3 मिशन ने

चर्खी है थोड़ी भी शीतल

मिट्टी

तिलक किया है

चंद्र यामा की पवित्र माती

को

फहराया है तिरंगा ध्यान

आजादी की इस अमृत

बैला में

चांद का

किया है बिल्कुल

नजदीक से

जो चांद कर करही थी

बृही अमा

युगों युगों से

दी है थोड़ी भी शी धर

उस चरखे के कच्चे

मखमली सोनाल भरे धानों

को

मानवजाति

अब इन कच्चे धानों से

बनाएँगी

मखमली सेज

इस मखमली सेज से

सजदे में है

सार विदुस्तान

चंद्र यामा तुझसे मिलने

को न जाने किनी

सदियों तक तस्वीर हैं

सिर्प दायी-नारी संग

पिल-बैदू

तुझसी तहानी सुनकर

साये हैं तो आगोश में

स्वर्णों में बुनी हैं

तुझसी अनेकोंके तस्वीरें

लेकिन

अब तरीं पावन

बैठ

हम सुनेंगे

पृथ्वी की भी कहानी

वाली नींद

जानकारी

को

किया है बिल्कुल

नजदीक से

जो चांद कर करही थी

बृही अमा

युगों युगों से

दी है थोड़ी भी शी धर

उस चरखे के कच्चे

मखमली सोनाल

धान-

चाल

आज तुम्हें तुम्हें

मामा

किसी भी साझा नहीं

की होगी

बतावेंगे तुम्हें

सारा हाल-

चाल

वास आप चांद मामा

अपना आशीर्वाद हाथ

हमारे साथ बनाये

रखना....!











